

गुलज़ार

हेकड़ी

एक सिकन्दर था पहले, मैं आज सिकन्दर हूँ
अपनी धुन में रहता हूँ, मैं मस्त कलन्दर हूँ

ताजमहल पे बैठ के मैंने तुमरी-वुमरी गाई
शाहजहाँ भी जाग गए, आ बैठे ओढ़ रजाई
मैं जितना ऊपर दिखता हूँ उतना ही अन्दर हूँ
एक सिकन्दर था पहले, मैं आज सिकन्दर हूँ

कार्ल मार्क्स से बचपन में खेला है गिल्ली डण्डा
एफिल टावर पे चढ़ के छीना है चील से अण्डा
ऐवरेस्ट की चोटी भी हूँ मैं एक समन्दर हूँ
एक सिकन्दर था पहले, मैं आज सिकन्दर हूँ

लन्दन जा के जॉर्ज किंग को मैंने गाना सुनाया
क्या नाम था रब-रक्खे उस को तबला सिखाया
हरफन-मौला कहते हैं मैं एक धुरन्धर हूँ
अपनी धुन में रहता हूँ, मैं मस्त कलन्दर हूँ

एक सिकन्दर था पहले, मैं आज सिकन्दर हूँ!!

